International Journal of Multidisciplinary Education and Research
www.multidisciplinaryjournals.in
ISSN: 2455-4588
Received: 17-05-2023, Accepted: 02-05-2023, Published:17-06-2023
Volume 8, Issue 2, 2023, Page No. 81-83

हिन्दी भाषा: उद्भव और विकास

डॉ. रवीन्द्र कुमार
हिन्दी अध्यापक, सरकारी सीनियर सैकण्डरी स्मार्ट स्कूल, (लड़के), पंजगराईं कलां, फरीदकोट, पंजाब, भारत

सारांश
प्रकृति निर्मित इस संसार में प्रत्येक प्राणी इस बात से अवगत है कि मानव जाति के पास समाज में अपना अस्तित्व कायम रखने के लिए भाषा के अतिरिक्त कोई अन्य ठोस कारण नहीं है जो उसे दिनों–दिन उलझनों से भरपूर होते जा रहे समाज में एक संतुलित जीवन जीने में मदद दे सके। कुछेक अन्य कारण हो सकते हैं। किन्तु उसे मुख्य धारा की अपेक्षा गौण दृष्टि से देखना ही वाँछनीय रहेगा। अतीत पर दृष्टिपात से इस बात पर तो सभी एक मत हैं ही कि पाषाण युग में मानव और जानवर एक ही श्रेणी में गिने जाते थे। किन्तु अपनी बुद्धि, तर्क, विज्ञान इत्यादि के इस्तेमाल और भाषा के उद्भव, विकास और इस्तेमाल ने ही उसे अन्य प्राणियों की अपेक्षा श्रेष्ठत्म स्थान पर ला खड़ा किया है। भारत देश अनेकता में एकता के कारण पूरी दुनिया में अपनी पहचान बनाये हुए है। भाषा के संबंध में भी उसकी यही पहचान है। प्रत्येक राज्य में अपनी–अपनी भाषा का बोलबाला है। किन्तु फिर भी 'हिन्दी भाषा' उसके लिए मान–सम्मान एवं गर्व का विषय रहा है। अपभ्रंश के पश्चात् वर्तमान संदर्भ में अपना मानक रूप बनाने तक उसे एक लम्बा समय व्यतीत करना पड़ा और यह प्रक्रिया आज भी निरंतर जारी है।

मूल शब्दः भाषा परिवार, अपभ्रंश, ऑस्ट्रिक, द्राविड़, आर्य, तुर्की, अरबी, उर्दू, पाण्डुलिपि, शिलालेख

संसार में विभिन्न प्रकार की बोलियों एवं भाषाओं का समावेश है। पूरी दुनिया में दिनों–दिन आपसी सहयोग व लोगों के एक दूसरे के संपर्क में आने से, लोगों के एक से दूसरे देशों के स्थानांतरण से भाषाओं में अन्यत्र ही परिवर्तन आ रहा है। कुछ भाषायें विलुप्त होने की ओर तेज़ी से बढ़ती जा रही हैं, जब्कि कुछ भाषायों के विकास एवं प्रसार में प्रगति आ रही है। बहुत सी भाषाओं के शब्द एक दूसरी भाषा में समाहित व कुछ भाषाओं के निकलने लगे हैं। वैसे तो भाषा के संबंध में यह प्रक्रिया निरंतर चलती आ रही है। किन्तु फिर भी सभी भाषायें अपना एक मानक रूप लिए हुए हैं। भूत में चाहे उनकी जड़ें किसी से भी संबंधित रही हों। खैर..महावीर प्रसाद द्विवेदी इस संबंध में कहते हैं कि "भारत में लगभग 147 के भाषायें या बोलियाँ बोली जाती हैं। उनमें से हिन्दी वह भाषा है जिसका संबंध एक ऐसी प्राचीन भाषा से है जिसे हमारे और यूरोप वालों के पूर्वज किसी समय बोलते थे।"[1]

हिन्दी भाषा के उद्भव और विकास की बात करते समय भाषा परिवार की अवहेलना करना वाँछनीय नहीं रहेगा। क्योंकि भाषा के संबंध में बात करते समय हम सभी इस बात से अवगत है कि संसार की जितनी भी भाषायें हैं, उन सभी में कहीं न कहीं उनके आपसी नजदीकी मेल–मिलाप अथवा संबंधों के कारण भाषा वैज्ञानिकों ने उन्हें आपस में एक श्रेणी में रख दिया गया था जिस कारण भाषा परिवार अस्तित्व में आये। विश्व की सभी भाषाओं के उद्भव एवं विकास के मद्देनजर सभी भाषाओं को विभिन्न भाषा–परिवारों का एक अहम हिस्सा बना दिया गया है। इसलिए हिन्दी भाषा के उद्भव एवं विकास के संबंध में हमें इससे संबंधित भाषा परिवार के संबंध में चर्चा करनी होगी। किन्तु ऐतिहासिक दृष्टिकोण के अंतर्गत बहुत सी अन्य पुस्तकों के अध्ययन से यह भी बात पता चली है कि भाषा परिवारों के अस्तित्व से पहले भी भाषाओं के संबंध में बहुत कुछ था।

एक बात तो कहना यहाँ अत्यंत लाजमी रहेगा कि भाषा के संबंध में सामग्री इकट्ठा करना जहाँ एक तरफ अपने आप में बहुत मुश्किल है, वहीं दूसरी ओर इसकी प्रमाणिकता पर भी प्रश्न चिह्न लग जाता है। क्योंकि बहुत सी चीजों को केवल अंदाजे से ही जुटाना पड़ता है। भाषाओं को निश्चित एवं व्यवस्थित रूप में रखने के लिए उनका कोई निश्चित आधार हमें इतिहास से प्राप्त नहीं होता। केवल कुछेक पुरानी किताबों, पाण्डुलिपियों, शिलालेखों, सरकारी दस्तावेज़ों एवं भाषाओं के बिगड़े रूपों को ही आधार बना इनके रूप को व्यवस्थित करना पड़ता हैं। वर्तमान समय तक भाषाओं की सुव्यवस्थितता के संबंध में कोई भी एक निश्चित एवं पारंगत रूप सामने नहीं आया है। जिस तरह भाषा के संबंध में खोज करने के कार्यक्रमों में निरंतरता आ रही है उसी के आधार पर पुरानी परम्परायें टूट रही हैं। किन्तु फिर भी हमें किसी न किसी को तो आधार व अनुमान मान कर इस पर कार्य करना होगा।

हिन्दी भाषा के संबंध में को अभी तक किये गये कार्यों के संबंध में यदि एक वृहद दृष्टिपात किया जाए तो यह तो निश्चित ही है कि इस संबंध में विदेशों में कार्य ज़्यादा हुआ है और भारत में कम। किन्तु फिर भी इस संबंध में कार्य चलता रहा। डॉ. जार्ज गियर्सन ने इस संबंध में सबसे पहले विदेशी धरती पर बैठकर कार्य किया। भाषा के संबंध में उनके द्वारा लिखे विभिन्न निबंधों के माध्यम से हमें भाषा के प्रति अहम जानकारी प्राप्त होती है। डॉ. जार्ज गियर्सन के हिन्दी भाषा के संबंध में किये गये कार्यों के संबंध में महावीर प्रसाद द्विवेदी अपनी किताब 'हिन्दी भाषा की उत्पत्ति में कहते हैं कि, "ऐसे समय में इस बात के जानने की, हमारी समझ में, बड़ी जरूरत है कि हिन्दी किसे कहते हैं? हिन्दुस्तानी किसे कहते है? उर्दू किसे कहते है? इनकी उत्पत्ति कैसे और कहाँ से हुई और इनकी पूर्ववर्ती भाषाओं ने कितने रूपांतरों के बाद इन्हें पैदा किया?

इन विषयों पर आज कितने ही लेख और छोटी–मोटी पुस्तकें निकल चुकी हैं। पर उनमें कही गयी बहुत सी बातों के संशोधन की जरूरत है। इस देश की गवर्नमेंट, जो यहाँ की भिन्न भिन्न भाषाओं और बोलियों की परीक्षा कराकर उनका इतिहास आदि लिख रही है। उससे कितनी ही नई–नई बातें मालूम हुई हैं। यह कार्य प्रसिद्ध विद्वान डाक्टर ग्रियर्सन कर रहे हैं। 1901 ईसवी मे जो मर्दुमशुमारी हुई थी उनकी रिर्पोट में एक अध्याय इस देश की भाषाओं के विषयों में भी है। यह अध्याय इन्हीं डॉक्टर ग्रियर्सन साहब का लिखा हुआ है। इनके लिखे और प्रकाशित किये जाने के बाद, भाषाओं की जाँच से संबंध रखने वाली डॉक्टर साहब ही की लिखी हुई कई किताबें निकली हैं।"[2]

अभी तक जितना भी हमने पढ़ा अथवा पढ़ाया गया, उसमें केवल हम यही पढ़ते एवं पढ़ाते आये हैं कि हिन्दी भाषा की उत्पत्ति संस्कृत से हुई है। कदाचित् कही न कहीं इस बात को इतना मानना ही हमारे लिए पर्याप्त है। क्योंकि हमारा आश्य केवल इस भाषा के प्रयोग अथवा इसके प्रचार–प्रसार तक ही सीमित रहना था। इसकी जड़ें कहाँ से कहाँ तक फैली हुई हैं, इस बात को संस्कृत से पीछे तक के आपसी संबंधों से हमारा कोई खास रिश्ता नहीं रह जाता। क्योंकि जन–साधारण के लिए केवल व्यावहारिक पक्ष ही एक विशेष अहमियत रखता है। किन्तु यदि हम भाषा–शोधार्थी हैं तो फिर हम इससे विमुख नहीं हो सकते। इस संबंध में महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने अपनी किताब 'हिन्दी भाषा की उत्पत्ति' में बड़ी अच्छी बात कही हैं कि "बंगाले में भागीरथी के किनारे रहने वालों से यह कह देना काफी नहीं है कि गंगा हरिद्वार से आई है या वहाँ उत्पन्न हुई है। नहीं, ठेठ गंगोतरी तक जाना होगा, और वहाँ से गंगा की उत्पत्ति का वर्णन करके क्रम क्रम से हरद्वार, कानपुर, प्रयाग, काशी, पटना होते हुए बंगाले के आखात में पहुँचना होगा।"[3] हिन्दी भाषा की उत्पत्ति के संबंध में भी बिल्कुल ऐसा ही करेंगे तो कदाचित एक निश्चित गंतव्य तक पहुँचने में हमें मदद ही मिलेगी।

वर्तमान समय तक हम सभी भारतीयों के दिलो–दिमाग में केवल यही बात घर किये हुए है कि हमारे पूर्वज़ आर्य थे और उनके द्वारा रचित आर्य भाषा ही हमारी पुरातन भाषा है। उसके विभिन्न रूपों के आधार पर, विभिन्न स्थानों पर रहती विभिन्न जातियों के लोगों के प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में बोलने तथा उनकी विभिन्न संस्कारों एवं विचारों के आधार पर किये गये बदलावों के आधार पर एक लम्बी समयावधि के अंतराल से भारतीय संस्कृत का जन्म हुआ। इस संबंध में सुनीति कुमार चटुर्ज्या अपनी किताब 'भारतीय–आर्य भाषा और हिन्दी' में कहते हैं कि "भारतीय जातियों एवं भारतीय संस्कृति की मूलाधार यह चार जातियाँ थीं– निषाद, द्रविड़, किरात और आर्य।"[4] कदाचित् यह सभी जातियाँ एशिया महादीप के विभिन्न स्थानों से अपने विभिन्न संस्कारों सहित भारत के विभिन्न कोनों में आकर बसती रही और कालांतर में एक दूसरे के संपर्क में आने से भाषा एवं संस्कृति में विभिन्न बदलाव आये। ऑस्ट्रिक, द्राविड़, आर्य इत्यादि जातियों ने अपने आध्यात्मिक चिन्तन, धार्मिक विचारों एवं आपनी सामाजिक कार्यकुश्लता के समन्वय के आधार पर भारतीय भाषा एवं संस्कृति में अपनी एक विशेष भूमिका निभाई है। पुरातन कड़ियों को विधिवत् तरीके से इस प्रकार से जोड़ने से भाषा के संबंध में बहुत सी ऐसी नई व रोचक बातों की जानकारी हमें प्राप्त होती है। और इस जानकारी के आधार के विधिवत् विशलेषण के आधार पर ही भाषा–परिवारों का आधार बना।

भाषा–परिवारों से कदाचित् हम पूरे विश्व की भाषाओं के उद्भव एवं विकास से अवगत होते हैं। भाषाओं के संबंध में यह एक आधारभूत शिलान्यास के रूप में अपनी भूमिका निभा रहे हैं। डॉ. भोलानाथ तिवारी अपनी किताब हिन्दी भाषा का इतिहास' में कहते हैं कि "जो भाषाएँ अपनी भाषिक विशेषताओं में समान हैं, वे मूलतः एक ही भाषा से निकली या विकसित हुई होंगी। जैसे एक व्यक्ति के बच्चों से पीढ़ी–दर–पीढ़ी में जनमे लोग एक परिवार के माने जाते हैं, उसी तरह भाषाशास्त्रियों ने एक भाषा से निकली और विकसित हुई भाषाओं को एक परिवार की माना है। इस तरह के, विश्व में कुल लगभग बारह–तेरह भाषा–परिवार हैं जिनमें विश्व की सारी भाषाओं को विभाजित किया गया है।"[5] अभी हमारा संबंध हिन्दी भाषा के उद्भव और विकास से है तो भारत में प्रचलित सभी भाषाओं से संबंधित पाँच भाषा–परिवारों का वर्णन हमें विभिन्न माध्यमों से मिलता है। पहले स्थान पर भारोपीय भाषा परिवार आता है। भारत देश में जितनी भी भाषाएँ बोली जाती हैं उनमें से 73 प्रतिशत भाषाएँ इसी परिवार की हिस्सा हैं। दूसरे स्थान पर द्रविड़ भाषा परिवार आता है। इसमें से 25 प्रतिशत भाषाएँ भारत देश में बोली जाती हैं। तीसरे स्थान पर ऑस्ट्रिक भाषा परिवार आता है। इसमें से 1.3 प्रतिशत भाषाएँ बोली जाती हैं। चौथे स्थान पर चीनी–तिब्बती भाषा परिवार आता है। उत्तरी भारत में केवल .07 प्रतिशत भाषाएँ इसी परिवार से संबंधित हैं और हाल ही में अंडमानी भाषा परिवार की खोज की गई है। प्रमाणिकता की दृष्टि से अभी इसमें संदेह बरकरार है।

हिन्दी भाषा भारोपीय भाषा परिवार से संबंधित है जोकि भारत के साथ–साथ यूरोप तक अपना प्रसार फैलाए हुए है। इसके कई नाम प्रचलित रहे। किन्तु अंत में भारोपीय भाषा परिवार ही मान्य किया गया। इस संबंध में डॉ. भोलानाथ तिवारी अपनी किताब 'हिन्दी भाषा का इतिहास' में कहते हैं कि "इस परिवार के एक ओर मुख्यतः भारत और दूसरी ओर युरोप है, इसी आधार पर पहले इसे 'भारत युरोपीय' कहा गया। बाद में इसी का संक्षेप 'भारोपीय' कर लिया गया। यों इन दोनों के पूर्व इस परिवार को 'इंडो–जर्मनिक', 'इंडो–केल्टिक' तथा 'आर्य' आदि कई अन्य नामों से भी समय–समय पर पुकारा जाता रहा है।"[6] इस भाषा परिवार के मुख्यतः दो वर्ग 'शतम' और 'केंतुम' थे। इसके 'शतम' वर्ग में आगे चलकर 'भारत–ईरानी' शाखा निकलती थी। हिन्दी भाषा सं संबंधित होने के कारण यह शाखा इस संबंध में विशेष महत्ता रखती है। भारत के धार्मिक ग्रंथ 'ऋग्वेद' और ईरानियों के धर्म ग्रंथ 'जेन्द अवेस्ता' का वर्णन इसी शाखा में मिलता है। मुख्य रूप से यदि हम कहें कि यही से आर्य भाषा का प्रारम्भ माना जाता है। किन्तु उस समय उसमें ईरानी भाषा का भी समावेश था जो कालांतर में जाकर अपना विभिन्न रूप अख्तियार कर पाया। इस संबंध में विभिन्न विद्वानों के विभिन्न मत हैं किन्तु फिर भी इस स्तर तक छोटे–छोटे बदलावों के साथ फिर भी एक मत हैं। इस संबंध में उदय नारायण तिवारी अपनी किताब 'हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास' में कहते हैं कि "संस्कृत, अवेस्ता की भाषा, प्राचीन–फारसी, आर्मनीय, प्राचीन–स्लाविक, प्राचीन ग्रीक, लैटिन, प्राचीन–जर्मेनिक तथा प्राचीन केल्तिक आदि भाषाएँ एक विशेष वर्ग अथवा परिवार की हैं। इस वर्ग की भाषाओं को 'भारोपीय' अथवा 'भारत–यूरोपीय' या इन्दोयोरोपीय के नाम से अभिहीत किया गया है क्योंकि भारत से लेकर योरप तक इनका प्रसार है।"[7]

भारोपीय भाषा परिवार में आर्य भाषा और ईरानी भाषा का एक विशेष स्थान रहा है। आर्य भाषा से शुरू होकर वर्तमान हिन्दी तक का लगभग 3500 वर्षों तक का यह सफर बड़ा ही विभिन्ताओं भरा रहा है। राजनैतिक, धार्मिक, विदेशी विचारधाराओं, जनसाधारण की सामाजिक व्यवस्थाओं के विभिन्न प्रसंगों ने इसमें अपनी विशेष भूमिका निभाई। आर्य भाषा की उत्पत्ति के संबंध में सुनीति कुमार चाटुर्ज्या अपनी किताब 'भारतीय–आर्य भाषा और हिन्दी' में कहते हैं कि "ऑस्ट्रिक एवं द्राविड़ जातियों से भारतीय समाज व्यवस्था एवं संस्कृति को कुछ मूलाधार–रूप उपादान प्राप्त हुए हैं। तिब्बती–चीनी जातियों का भी कुछ आंशिक अवशेष हिमाचल के पाद–देश की तथा उत्तर–पूर्वी भारत की जातियों और सम्भवतः उनकी संस्कृति में पाया जाता है। किन्तु इन सभी विभिन्न उपादानों का सम्पूर्ण एकीकरण आर्यों की उच्च कोटि की व्यवस्था–शक्ति के फलस्वरूप ही हो सका। कहीं–कहीं यह एकीकरण रासायनिक पूर्णता को पहुँच गया, तो कहीं केवल परस्पर के सम्मिश्रण तक ही सीमित रहा। परन्तु भारतीय जन–समुदाय की ऐतिहासिक, धार्मिक और विचारगत विशेषताओं को लेकर बनी हुई संस्कृति के निर्माण में सबसे बड़ा हाथ आर्यों की भाषा का रहा। ऑस्ट्रिक और द्राविड़ों द्वारा भारतीय संस्कृति का शिलान्यास हुआ था, और आर्यों ने उस आधार–शिला पर जिस मिश्रित संस्कृत का निर्माण किया, उस संस्कृति का माध्यम, उसकी प्रकाश–भूमि एवं उसका प्रतीक यही आर्य भाषा बनी"[8]

आर्य भाषा की उत्पत्ति के पश्चात् लगभग 500 से लेकर 1000 वर्षों के अंतराल के अंतर्गत भारतीय भाषाओं ने इसकी गुलामी

एवं आजादी के संदर्भ में बदलाव के विभिन्न रूप देखे। कभी–कभी भाषाएँ पूर्ण रूप से विलुप्त होती नजर आई और कभी–कभी नयी भाषाओं के जन्म के साथ–साथ एक भाषा से दूसरी भाषा में शब्दों के समावेश और विस्थापन का रूप भी बाखूबी देखने को मिला। भारत में आर्य भाषा ईसा के लगभग 1500 वर्ष पूर्व से मानी जाती है और वर्तमान समय 2021 ईसवी तक हिन्दी के सफर को इस चार्ट के माध्यम से समझ सकते हैं। किन्तु इससे पहले भाषा के इस लगभग 3500 वर्षों के सफर के कुछेक अहम बिन्दुओं पर हम जरूर चर्चा करेंगे।

आर्य भाषा के समय प्रथम धार्मिक ग्रंथ 'ऋग्वेद' का वर्णन मिलता है। यह ईरानी ग्रंथ 'अवेस्ता' से भाषा के रूप में कुछेक भिन्नता रखता है। क्योंकि इससे पहले आर्य भाषा और ईरानी भाषा में बहुत कुछ मिलाजुला असर था। कालांतर में इसमें अंतर नज़र आया। ऋग्वेद की भाषा वैदिक संस्कृत कहलायी और इसमें धार्मिक संहिता की रचना हुई। किन्तु यह जन–साधारण की भाषा नहीं थी। यह एक प्रकार से ऋषिओं–मुनियों की भाषा थी। कठिन से साधारण की ओर रुचि रखने वाली मानवीय प्रवृति के अंतर्गत कालांतर में मानव जाति ने इसमें धीरे–धीरे बदलाव लाना प्रारम्भ किया और बदलाव के रूप में हमें उत्तर अथवा लौकिक संस्कृत का स्वरूप मिला। इसमें अच्छा खासा साहित्य रचित हुआ। भाषा के बदलते स्वरूप के चलते लौकिक संस्कृत के बाद 'पालि' भाषा का जन्म हुआ। इसके पीछे भी एक कारण है कि महात्मा बुद्ध ने अपने विचारों एवं ज्ञान के प्रचार–प्रसार हेतु इसका निर्माण किया। 'त्रिपठिक' जैसा धार्मिक ग्रंथ इस भाषा में रचा गया। दरअसल यह पहली ऐसी भाषा थी जो जन–साधारण के व्यावहारिक पक्ष हेतु पूर्ण रूप से संतोषजनक थी। इसके पश्चात् प्राकृत भाषा जोकि प्रथम शताब्दी से 500 ईसवी तक मानी जाती रही, का प्रचलन रहा। इसके पश्चात् अपभ्रंश भाषा का समय लगभग 500 ईसवी से 1000 ईसवी तक रहा। यही समय हिन्दी भाषा का आदिकाल कहलाया। उसके बाद भारत देश में विभिन्न राजाओं–महाराजाओं के आपसी आक्रमण के कारण शान्ति की चाह रखने की लालसा हेतु भारत के सभी कोनों में से भक्ति की लहर का उत्थान हुआ और विभिन्न प्रकार से साहित्य सृजन होने लगा। ठीक उसी समय भारत में मुगलों का आगमन हुआ। उनकी भाषा फारसी थी जिससे हिन्दी भाषा प्रभावित हुई। बहुत से अरबी, तुर्की एवं फारसी भाषा के शब्द हिन्दी भाषा में शामिल हुए।

1700 ईसवी के आसपास अंग्रेजों ने भारत पर अपना कब्जा जमाना शुरू कर दिया था और उनकी भाषा अंग्रेज़ी थी जिससे फिर से हिन्दी भाषा नकारात्मक रूप से प्रभावित होने लगी। धीरे–धीरे फिर से लोग हिन्दी छोड़ अंग्रेज़ी भाषा सीखने लगे जिससे कालांतर में अंग्रेज़ी भाषा के बहुत से शब्द हिन्दी भाषा में आ गये। दिल्ली में अमीर खुसरो व अन्य कवियों एवं लेखकों ने खड़ी बोली के माध्यम से हिन्दी को रीढ़ की हड्डी प्रदान की। इस प्रकार संस्कृत, अरबी, फारसी, अंग्रेजी, तुर्की इत्यादि विभिन्न भाषाओं के शब्दों को समेटे हिन्दी शब्द भण्डार में निरंतर वृद्धि हो रही है।

निष्कर्ष

यह प्रक्रिया निरंतर आज भी जारी है। विदेशों में हिन्दी अध्ययन और मनन का कार्य आज बड़ी ही तेजी से फैल रहा है। संसार के बहुत से अंग्रेज़ी देशों में हिन्दी भाषा पर बहुत कार्य हो रहा है। बहुत सी संस्थाएँ हिन्दी की सेवा में विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन करने में निरंतरता जारी रखे हुए हैं। हिन्दी सेवियों एवं प्रेमिओं के कारण हिन्दी सब कुछ समेटते हुए पूरे विश्व में अपनी पताका फहरा रही है।

संदर्भ सूचि

1. द्विवेदी महावीर प्रसाद, हिन्दी भाषा की उत्पत्ति, इंडियन प्रेस, लिमिटिड, प्रयाग, 1925, पृष्ठ–04
2. द्विवेदी महावीर प्रसाद, हिन्दी भाषा की उत्पत्ति, इंडियन प्रेस, लिमिटिड, प्रयाग, 1925, पृष्ठ–03
3. द्विवेदी महावीर प्रसाद, हिन्दी भाषा की उत्पत्ति, भूमिका के अंश से, इंडियन प्रेस, लिमिटिड, प्रयाग, 1925, पृष्ठ–03
4. चाटुर्ज्या, सुनीति कुमार, भारीतय–आर्य भाषा और हिन्दी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, चौथा संस्करण, 1970, पृष्ठ–14
5. तिवारी, डॉ. भोलानाथ, हिन्दी भाषा का इतिहास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, चतुर्थ संस्करण, 2004, पृष्ठ–09
6. तिवारी, डॉ. भोलानाथ, हिन्दी भाषा का इतिहास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, चतुर्थ संस्करण, 2004, पृष्ठ–16
7. तिवारी, उदयनारायण, हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास, भारती भण्डार प्रकाशन, प्रयाग, सम्वत् 2012, पृष्ठ 01
8. चाटुर्ज्या, सुनीति कुमार, भारीतय–आर्य भाषा और हिन्दी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, चौथा संस्करण, 1970, पृष्ठ–15